साहित्य भवन®

# NCERT

## अध्यायवार प्रश्नोत्तर

# सामाजिक विज्ञान

## कक्षा 9

***NCERT Exercise*** के सभी प्रश्नों का

- प्रामाणिक
- सटीक
- विस्तृत
- क्रमवार

तथा सरल भाषा में **सम्पूर्ण हल**।

# एन. सी. ई. आर. टी.
# अध्यायवार प्रश्नोत्तर
(NCERT Solutions Chapterwise)

# सामाजिक विज्ञान

## कक्षा 9


डॉ. रूपाली श्रीवास्तव
Ph.D.

मोनिका गुप्ता
M.Com., M.B.A.

डॉ. अनुराधा शर्मा
Ph.D.

चन्द्रेश कुमार यादव
M.A., M.Phil.


Sahitya Bhavan®

साहित्य भवन®

अन्य महत्वपूर्ण जानकारी के लिए लॉगऑन करें

www.sahityabhawan.co.in

Join us on:

Sahitya Bhawan®

कोड : 1891

ISBN : 978-93-88115-14-8

प्रकाशक : **साहित्य भवन®**
सी 17, साइट सी
सिकन्दरा औद्योगिक क्षेत्र
आगरा-282007 (उ.प्र.)

फोन : 9837052020, 8958500021

ईमेल : info@sahityabhawan.co.in

वेबसाइट : www.sahityabhawan.co.in

© प्रकाशकाधीन सुरक्षित

- इस पुस्तक का कोई भी अंश प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित करना अविधिमान्य होगा।
- इस पुस्तक को यथासम्भव त्रुटिहीन एवं अद्यतन रूप से प्रकाशित करने के सभी प्रयास किये गये हैं, फिर भी संयोगवश यदि इसमें कोई कमी अथवा त्रुटि रह गयी हो तो उससे कारित क्षति अथवा संताप के लिए लेखक, प्रकाशक एवं मुद्रक का कोई दायित्व नहीं होगा।
- किसी भी परिवाद के लिए न्यायिक क्षेत्र केवल आगरा न्यायालय ही होगा।

# भूमिका

एन. सी. ई. आर. टी. पुस्तकों की आवश्यकता एवं महत्ता को ध्यान में रखते हुए, एन. सी. ई. आर. टी. पुस्तकों में शामिल अभ्यास प्रश्नों के हल विस्तृत व्याख्या सहित इस पुस्तक में प्रस्तुत कर रहे हैं।

यथासम्भव, विद्यार्थियों की रुचि के अनुसार, सरल भाषा का प्रयोग किया गया है जिससे उनको समझने में कोई परेशानी न हो।

यद्यपि पुस्तक को त्रुटि रहित बनाने का पूर्ण प्रयास किया गया है फिर भी कोई त्रुटि रह गई हो तो सुधी पाठक क्षमा करते हुए अपने सुझाव हमें प्रेषित करें जिसके लिए हम उनके आभारी रहेंगे।

अन्त में साहित्य भवन के श्री राहुल बंसल जी का आभार प्रकट करते हैं जिनके दिशा निर्देशन एवं अथक् प्रयासों से यह पुस्तक आपके समक्ष प्रस्तुत है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक विद्यार्थियों के लिए पूर्ण उपयोगी सिद्ध होगी।

— लेखकगण

Sahitya Bhawan ®

# विषय–सूची

## भारत और समकालीन विश्व-I


1. फ्रांसीसी क्रान्ति ..... 1
2. यूरोप में समाजवाद एवं रूसी क्रान्ति ..... 5
3. नात्सीवाद और हिटलर का उदय ..... 12
4. वन्य समाज एवं उपनिवेशवाद ..... 17
5. आधुनिक विश्व में चरवाहे ..... 21
6. किसान और काश्तकार ..... 25
7. इतिहास और खेल क्रिकेट की कहानी ..... 30
8. पहनावे का सामाजिक इतिहास ..... 33


## भूगोल


1. भारत–आकार और स्थिति ..... 36
2. भारत का भौतिक स्वरूप ..... 40
3. अपवाह ..... 47
4. जलवायु ..... 54
5. प्राकृतिक वनस्पति तथा वन्य प्राणी ..... 61
6. जनसंख्या ..... 65


## लोकतांत्रिक राजनीति-I


1. समकालीन विश्व में लोकतंत्र ..... 69
2. लोकतंत्र क्या? लोकतंत्र क्यों? ..... 75
3. संविधान निर्माण ..... 81
4. चुनावी राजनीति ..... 85
5. संस्थाओं का कामकाज ..... 91
6. लोकतांत्रिक अधिकार ..... 95


## अर्थशास्त्र


1. पालमपुर गांव की कहानी ..... 98
2. संसाधन के रूप में लोग ..... 104
3. निर्धनता एक चुनौती ..... 110
4. भारत में खाद्य सुरक्षा ..... 119


Sahitya Bhawan ®

# 1

# फ्रांसीसी क्रान्ति

**पृष्ठ संख्या 6**

**प्रश्न 1. नीचे दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर चित्र के रिक्त स्थान को भरें :**

**खाद्य दंगे, अन्नाभाव, मृतकों की संख्या में वृद्धि, खाद्य पदार्थों की बढ़ती कीमत, कमजोर शरीर।**

**उत्तर**—

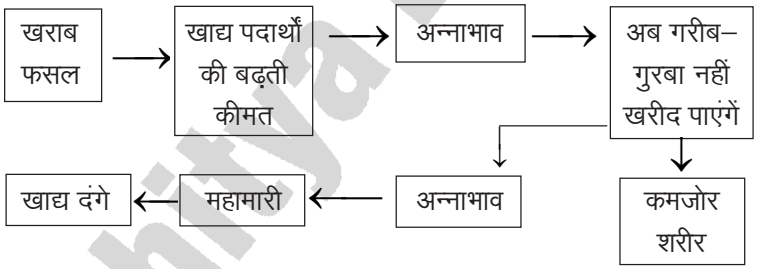


**पृष्ठ संख्या 24**

**प्रश्न 2. फ्रांस में क्रान्ति की शुरुआत किन परिस्थितियों में हुई?**

**उत्तर**—फ्रांसीसी सम्राट लुई XVI ने 5 मई, 1789 को नए करों के प्रस्ताव के अनुमोदन के लिए ऐस्टेट्स जनरल की बैठक बुलाई। प्रतिनिधियों की मेजबानी के लिए वर्साय के एक आलीशान भवन को सजाया गया। पहले और दूसरे एस्टेट ने इस बैठक में अपने 300-300 प्रतिनिधि भेजे जो आमने–सामने की कतारों में बिठाए गए। तीसरे एस्टेट के 600 प्रतिनिधि उनके पीछे खड़े किए गए। तीसरे एस्टेट का प्रतिनिधित्व इससे अपेक्षाकृत समृद्ध एवं शिक्षित वर्ग कर रहे थे। किसानों, औरतों एवं कारीगरों का सभा में प्रवेश वर्जित था। फिर भी लगभग 40,000 पत्रों के माध्यम से उनकी शिकायतों एवं मांगों की सूची बनायी गई, जिसे प्रतिनिधि अपने साथ लेकर आए थे।

Sahitya Bhawan ®

एस्टेट्स जनरल के नियमों के अनुसार प्रत्येक वर्ग को एक मत देने का अधिकार था। इस बार भी लुई XVI इसी प्रथा का पालन करने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ था। परन्तु तीसरे वर्ग के प्रतिनिधियों ने मांग रखी कि अबकी बार पूरी सभा द्वारा मतदान कराया जाना चाहिए, जिसमें प्रत्येक सदस्य को एक मत देने का अधिकार होगा। यह एक लोकतान्त्रिक सिद्धान्त था जिसे मिसाल के तौर पर रूसो ने अपनी पुस्तक, ''द सोशल कान्ट्रेक्ट'' में प्रस्तुत किया था। जब सम्राट ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया तो तीसरे एस्टेट के प्रतिनिधि विरोध जताते हुए सभा से बाहर चले गए तथा यहीं से क्रान्ति की शुरुआत हुई।

**प्रश्न 3. फ्रांसीसी समाज के किन तबकों को क्रान्ति का फायदा मिला? कौन से समूह सत्ता छोड़ने के लिए मजबूर हो गए? क्रान्ति के नतीजों से समाज के किन समूहों को निराशा हुई होगी?**

**उत्तर**—फ्रांसीसी समाज में क्रान्ति के पश्चात् सन् 1791 के संविधान ने कानून बनाने का अधिकार नेशनल असेम्बली को सौंप दिया। नेशनल असेम्बली अप्रत्यक्ष रूप से चुनी जाती थी। सर्वप्रथम नागरिक एक निर्वाचक समूह का चुनाव करते थे, जो पुनः असेम्बली के सदस्यों को चुनते थे। सभी नागरिकों को मतदान का अधिकार नहीं था। 25 वर्ष से अधिक उम्र वाले केवल ऐसे पुरुषों को ही सक्रिय नागरिक का दर्जा दिया गया था, जो कम–से–कम तीन दिन की मजदूरी के बराबर कर चुकाते थे। शेष पुरुषों और महिलाओं को निष्क्रिय नागरिक के रूप में वर्गीकृत किया गया था। निर्वाचक की योग्यता प्राप्त करने तथा असेम्बली का सदस्य होने के लिए लोगों का करदाताओं को उच्चतम श्रेणी में होना जरूरी था।

इसके तहत पादरी वर्ग के लोगों को भी अपने विशेषाधिकारों को छोड़ देने के लिए विवश किया गया। धार्मिक कर समाप्त कर दिया गया और चर्च के स्वामित्व वाली भूमि जब्त कर ली गई। इस प्रकार कम–से–कम 20 अरब लिव्रे की सम्पत्ति सरकार के हाथ में आ गई।

**प्रश्न 4. उन्नीसवीं एवं बीसवीं सदी की दुनिया के लिए फ्रांसीसी क्रान्ति कौन सी विरासत छोड़ गई?**

**उत्तर**—स्वतन्त्रता और जनवादी अधिकारों के विचार फ्रांसीसी क्रान्ति की सबसे महत्वपूर्ण विरासत थे। ये विचार उन्नीसवीं सदी में फ्रांस से निकलकर बाकी यूरोप में फैले और इनके कारण वहां सामन्ती व्यवस्था का नाश हुआ। औपनिवेशिक समाजों ने सम्प्रभु राष्ट्र राज्य की स्थापना के अपने आन्दोलनों में दासता से मुक्ति के विचारों को नई परिभाषा दी। टीपू सुल्तान और राजा राममोहन राय क्रान्तिकारी फ्रांस में उपजे विचारों से प्रेरणा लेने वाले दो ठोस उदाहरण थे।

Sahitya Bhawan ®

**प्रश्न 5. उन जनवादी अधिकारों की सूची बनाएं जो आज हमें मिले हुए हैं और जिनका उद्‌गम फ्रांसीसी क्रान्ति में है?**

**उत्तर**—मूलभूत अधिकार निम्नलिखित हैं—

(i) औरत जन्मता स्वतन्त्र है और अधिकारों में पुरुष के समान है।

(ii) सभी राजनीतिक संगठनों का लक्ष्य पुरुष एवं महिला के नैसर्गिक अधिकारों को संरक्षित करना है। ये अधिकार हैं—स्वतन्त्रता, सम्पत्ति, सुरक्षा और सबसे बढ़कर शोषण के प्रतिरोध का अधिकार।

(iii) समग्र सम्प्रभुता का स्रोत राष्ट्र में निहित है जो पुरुषों एवं महिलाओं के संघ के सिवाय कुछ नहीं है।

(iv) कानून सामान्य इच्छा की अभिव्यक्ति होनी चाहिए। सभी महिला एवं पुरुष नागरिकों का या तो व्यक्तिगत रूप से या अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से विधि–निर्माण में दखल होना चाहिए। यह सभी के लिए समान होना चाहिए। सभी महिला एवं पुरुष नागरिक अपनी योग्यता एवं प्रतिभा के बल पर समान रूप से एवं बिना किसी भेदभाव के हर तरह के सम्मान व सार्वजनिक पद के हकदार हैं।

(v) कोई भी महिला अपवाद नहीं है। वह विधि–सम्मत प्रक्रिया द्वारा अपराधी ठहराई जा सकती है, गिरफ्तार और नजरबन्द की जा सकती है। पुरुषों की तरह महिलाएं भी इस कठोर कानून का पालन करें।

(vi) आदमी स्वतन्त्र पैदा होते हैं, स्वतन्त्र रहते हैं और उनके अधिकार समान होते हैं।

(vii) प्रत्येक राजनीतिक संगठन का लक्ष्य आदमी के नैसर्गिक एवं अहरणीय अधिकारों को संरक्षित रखना है। ये अधिकार हैं—स्वतन्त्रता, सम्पत्ति, सुरक्षा एवं शोषण के प्रतिरोध का अधिकार।

(viii) समग्र सम्प्रभुता का स्रोत राज्य में निहित है; कोई भी समूह या व्यक्ति ऐसा अनाधिकार प्रयोग नहीं करेगा जिसे जनता की सत्ता की स्वीकृति न मिली हो।

स्वतन्त्रता का आशय ऐसे काम करने की शक्ति से है जो औरों के लिए नुकसानदेह न हो।

(ix) समाज के लिए किसी भी हानिकारक कृत्य पर पाबन्दी लगाने का अधिकार कानून के पास है।

(x) कानून सामान्य इच्छा की अभिव्यक्ति है। सभी नागरिकों को व्यक्तिगत रूप से या अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से इसके निर्माण में भाग लेने का अधिकार है। कानून की नजर में सभी नागरिक समान हैं।

(xi) कानून सम्मत प्रक्रिया के बाहर किसी भी व्यक्ति को न तो दोषी ठहराया जा सकता है और न ही गिरफ्तार अथवा नजरबन्द किया जा सकता है।

Sahitya Bhawan ®

(xii) प्रत्येक नागरिक बोलने, लिखने और छापने के लिए आजाद है। लेकिन कानून द्वारा निर्धारित प्रक्रिया के तहत ऐसी स्वतन्त्रता के दुरुपयोग की जिम्मेदारी भी उसी की होगी।

(xiii) सार्वजनिक सेना तथा प्रशासन के खर्चे चलाने के लिए एक सामान्य कर लगाना अपरिहार्य है। सभी नागरिकों पर उनकी आय के अनुसार समान रूप से कर लगाया जाना चाहिए।

(xiv) चूंकि सम्पत्ति का अधिकार एक पावन एवं अनुलंघनीय अधिकार है, अतः किसी भी व्यक्ति को इससे वंचित नहीं किया जा सकता है, जब तक कि विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया के तहत सार्वजनिक आवश्यकता के लिए सम्पत्ति का अधिग्रहण करना आवश्यक न हो। ऐसे मामले में अग्रिम मुआवजा जरूर दिया जाना चाहिए।

**प्रश्न 6. क्या आप इस तर्क से सहमत हैं कि सार्वभौमिक अधिकारों के सन्देश में अन्तर्विरोध हैं?**

**उत्तर**—नहीं, हम इस तर्क से सहमत नहीं हैं, सार्वभौमिक अधिकार जीवन के सभी पक्षों से जुड़े हुए हैं।

**प्रश्न 7. नैपोलियन के उदय को कैसे समझा जा सकता है?**

**उत्तर**—सन् 1804 में नैपोलियन बोनापार्ट ने खुद को फ्रांस का सम्राट घोषित कर दिया। उसने पड़ोस के यूरोपीय देशों की विजय यात्रा शुरू की। पुराने राजवंशों को हटाकर उसने नए साम्राज्य बनाए और उनकी बागडोर अपने खानदान के लोगों के हाथ में दे दी। नैपोलियन खुद को यूरोप के आधुनिकीकरण का अग्रदूत मानता था। उसने निजी सम्पत्ति की सुरक्षा के कानून बनाए और दशमलव पद्धति पर आधारित नाप–तौल की एक समान प्रणाली चलाई। शुरु–शुरु में बहुत सारे लोगों को नैपोलियन मुक्तिदाता लगता था और उससे जनता को स्वतन्त्रता दिलाने की उम्मीद थी। पर जल्दी ही उसकी सेनाओं को लोग हमलावर मानने लगे। आखिरकार सन् 1815 में वॉटरलू में उसकी हार हुई। यूरोप के बाकी हिस्सों में मुक्ति और आधुनिक कानूनों को फैलाने वाले उसके क्रान्तिकारी उपायों का असर उसकी मृत्यु के काफी समय बाद सामने आया।

Sahitya Bhawan ®

# 2

# यूरोप में समाजवाद एवं रूसी क्रान्ति

**प्रश्न 1. निजी सम्पत्ति के बारे में पूंजीवादी और समाजवादी विचार धारा के बीच अन्तर बताइए।**

**उत्तर**—पूंजीवादी विचारधारा के अन्तर्गत सम्पत्ति पर कुछ ही लोगों का आधिपत्य होता है। फैक्ट्रियों में लगी पूंजी पर पूंजीपतियों का स्वामित्व होता है और पूंजीपतियों का मुनाफा मजदूरों की मेहनत से पैदा होता है। समाजवादी निजी सम्पत्ति के विरोधी थे। यानी, वे सम्पत्ति पर निजी स्वामित्व को सही नहीं मानते थे। उनका कहना था कि सम्पत्ति के निजी स्वामित्व की व्यवस्था ही सारी समस्याओं की जड़ है। उनका तर्क था कि बहुत सारे लोगों के पास सम्पत्ति तो है जिससे दूसरों को रोजगार भी मिलता है, लेकिन समस्या यह है कि सम्पत्तिधारी व्यक्ति को सिर्फ अपने फायदे से ही मतलब रहता है, वह उनके बारे में नहीं सोचता जो उसकी सम्पत्ति को उत्पादनशील बनाते हैं। इसलिए, अगर सम्पत्ति पर किसी एक व्यक्ति के बजाय पूरे समाज का नियन्त्रण हो तो साझा सामाजिक हितों पर ज्यादा अच्छी तरह ध्यान दिया जा सकता है। समाजवादी इस तरह का बदलाव चाहते थे और इसके लिए उन्होंने बड़े पैमाने पर अभियान चलाया।

**प्रश्न 2. रूस में 1905 में क्रान्तिकारी उथल–पुथल क्यों पैदा हुई थी? क्रान्तिकारियों की क्या मांगें थीं?**

**उत्तर**—रूस एक **निरंकुश राजशाही** था। अन्य यूरोपीय शासकों के विपरीत बीसवीं सदी की शुरुआत में भी जार राष्ट्रीय संसद के अधीन नहीं था। उदारवादियों ने इस स्थिति को खत्म करने के लिए बड़े पैमाने पर मुहिम चलाई। 1905 की क्रान्ति के दौरान उन्होंने संविधान की रचना के लिए सोशल डेमोक्रेट और समाजवादी क्रान्तिकारियों को साथ लेकर किसानों और मजदूरों के बीच काफी काम किया। रूसी साम्राज्य के तहत उन्हें राष्ट्रवादियों (जैसे पोलैण्ड में) और इस्लाम के आधुनिकीकरण के समर्थक **जदीदियों** (मुस्लिम–बहुल इलाकों में) का भी समर्थन मिला।

रूसी मजदूरों के लिए 1904 का साल बहुत बुरा रहा। जरूरी चीजों की कीमतें इतनी तेजी से बढ़ीं कि **वास्तविक वेतन** में 20 प्रतिशत तक की गिरावट आ गई। उसी समय मजदूर संगठनों की सदस्यता में भी तेजी से वृद्धि हुई। जब 1904 में ही गठित की

Sainik Bhawan®

गई असेम्बली ऑफ रशियन वर्कर्स (रूसी श्रमिक सभा) के चार सदस्यों को प्युतिलोव आयरन वर्क्स में उनकी नौकरी से हटा दिया गया तो मजदूरों ने आन्दोलन छेड़ने का एलान कर दिया। अगले कुछ दिनों के भीतर सेंट पीटर्सबर्ग के 110,000 से ज्यादा मजदूर काम के घण्टे घटाकर आठ घण्टे किए जाने, वेतन में वृद्धि और कार्य–स्थितियों में सुधार की मांग करते हुए हड़ताल पर चले गए।

इसी दौरान जब पादरी गैपॉन के नेतृत्व में मजदूरों का एक जुलूस विंटर प्लेस (जार का महल) के सामने पहुंचा तो पुलिस और कोसैक्स ने मजदूरों पर हमला बोल दिया। इस घटना में 100 से ज्यादा मजदूर मारे गए और लगभग 300 घायल हुए। इतिहास में इस घटना को *खूनी रविवार* के नाम को याद किया जाता है। 1905 की क्रान्ति की शुरुआत इसी घटना से हुई थी। सारे देश में हड़तालें होने लगीं। जब नागरिक स्वतन्त्रता के अभाव का विरोध करते हुए विद्यार्थी अपनी कक्षाओं का बहिष्कार करने लगे तो विश्वविद्यालय भी बन्द कर दिए गए। वकीलों, डॉक्टरों, इंजीनियरों और अन्य मध्यवर्गीय कामगारों ने संविधान सभा के गठन की मांग करते हुए यूनियन ऑफ यूनियंस की स्थापना कर दी।

1905 की क्रान्ति के दौरान जार ने एक निर्वाचित परामर्शदाता संसद या ड्यूमा के गठन पर अपनी सहमति दे दी। क्रान्ति के समय कुछ दिन तक फैक्ट्री मजदूरों की बहुत सारी ट्रेड यूनियनें और फैक्ट्री कमेटियां भी अस्तित्व में रहीं। 1905 के बाद ऐसी ज्यादातर कमेटियां और यूनियनें अनधिकृत रूप से काम करने लगीं, क्योंकि उन्हें गैरकानूनी घोषित कर दिया गया था। राजनीतिक गतिविधियों पर भारी पाबन्दियां लगा दी गईं। जार ने पहली ड्यूमा को मात्र 75 दिन के भीतर और पुनर्निर्वाचित दूसरी ड्यूमा को 3 महीने के भीतर बर्खास्त कर दिया। वह किसी तरह की जवाबदेही या अपनी सत्ता पर किसी तरह का अंकुश नहीं चाहता था। उसने मतदान कानूनों में फेरबदल करके तीसरी ड्यूमा में रूढ़िवादी राजनेताओं को भर डाला। उदारवादियों और क्रान्तिकारियों को बाहर रखा गया।

**पृष्ठ संख्या 48**

**प्रश्न 3. रूस के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक हालात 1905 से पहले कैसे थे?**

**उत्तर**—बीसवीं सदी की शुरुआत में रूस की आबादी का एक बहुत बड़ा हिस्सा रैयतवाड़ी से जुड़ा हुआ था। रूसी साम्राज्य की लगभग 85 प्रतिशत जनता आजीविका के लिए खेती पर ही निर्भर थी। यूरोप के किसी भी देश में खेती पर आश्रित जनता का प्रतिशत इतना नहीं था। उदाहरण के तौर पर, फ्रांस तथा जर्मनी में खेती पर निर्भर आबादी 40-50 प्रतिशत से ज्यादा नहीं थी। रूसी साम्राज्य के किसान अपनी जरूरतों के साथ–साथ बाजार के लिए भी खेती करते थे। रूस अनाज का एक बड़ा निर्यातक था।

Sahitya Bhawan®

उद्योग बहुत कम थे। सेंट पीटर्सबर्ग और मास्को प्रमुख औद्योगिक इलाके थे हालांकि ज्यादातर उत्पादन कारीगर ही करते थे, लेकिन कारीगरों के साथ–साथ बड़े–बड़े कल–कारखाने भी मौजूद थे। बहुत सारे कारखाने 1890 के दशक में चालू हुए थे जब रूस के रेल नेटवर्क को बनाया जा रहा था। उसी समय रूसी उद्योगों में विदेशी निवेश भी तेजी से बढ़ा था। इन कारकों के चलते कुछ ही सालों में रूस के कोयला उत्पादन में दोगुना और स्टील उत्पादन में चार गुना वृद्धि हुई थी। सन् 1900 तक कुछ इलाकों में तो कारीगरों और कारखाना मजदूरों की संख्या लगभग बराबर हो गई थी।

ज्यादातर कारखाने उद्योगपतियों की निजी सम्पत्ति थे। मजदूरों को न्यूनतम काम मिलता रहे और काम की पाली के घण्टे निश्चित हों—इस बात का ध्यान रखने के लिए सरकारी विभाग बड़ी फैक्ट्रियों पर नजर रखते थे, लेकिन फैक्ट्री इंस्पेक्टर भी नियमों के उल्लंघन को रोक पाने में नाकामयाब थे। कारीगरों की इकाइयों और वर्कशॉपों में काम की पाली प्रायः 15 घण्टे तक की जाती थी जबकि कारखानों में मजदूर आमतौर पर 10-12 घण्टे की पालियों में काम करते थे। मजदूरों के रहने के लिए भी कमरों से लेकर डार्मिटरी तक तरह–तरह की व्यवस्था मौजूद थी।

सामाजिक स्तर पर मजदूर बंटे हुए थे। कुछ मजदूर अपने मूल गांवों के साथ अभी भी गहरे सम्बन्ध बनाए हुए थे। बहुत सारे मजदूर स्थायी रूप से शहरों में ही बस चुके थे। उनके बीच योग्यता और दक्षता के स्तर पर भी काफी फर्क था। सेंट पीटर्सबर्ग के एक धातु मजदूर ने कहा था : 'धातुकर्मी मजदूरों में खुद को साहब मानते थे। उनके काम में ज्यादा प्रशिक्षण और निपुणता की जरूरत जो रहती थी....।' 1914 में फैक्ट्री मजदूरों में औरतों की संख्या 31 प्रतिशत थी, लेकिन उन्हें पुरुष मजदूरों के मुकाबले कम वेतन मिलता था (मर्दों की तनख्वाह के मुकाबले आधे से तीन–चौथाई तक)। मजदूरों के बीच मौजूद फासला उनके पहनावे और व्यवहार में भी साफ दिखाई देता था। यद्यपि कुछ मजदूरों ने बेरोजगारी या आर्थिक संकट के समय एक–दूसरे की मदद करने के लिए संगठन बना लिए थे, लेकिन ऐसे संगठन बहुत कम थे।

इन विभेदों के बावजूद, जब किसी को नौकरी से निकाल दिया जाता था या उन्हें मालिकों से कोई शिकायत होती थी तो मजदूर एकजुट होकर हड़ताल भी कर देते थे। 1896-1897 के बीच कपड़ा उद्योग में और 1902 में धातु उद्योग में ऐसी हड़तालें काफी बड़ी संख्या में आयोजित की गईं।

देहात की ज्यादातर जमीन पर किसान खेती करते थे। लेकिन विशाल सम्पत्तियों पर सामंतों, राजशाही और ऑर्थोडॉक्स चर्च का कब्जा था। मजदूरों की तरह किसान भी बंटे हुए थे। किसान बहुत धार्मिक स्वभाव के थे। इक्का–दुक्का अपवादों को छोड़ दिया जाए तो वे सामंतों और नवाबों का बिल्कुल सम्मान नहीं करते थे। नवाबों और सामंतों को जो सत्ता और हैसियत मिली हुई थी वह लोकप्रियता की वजह से नहीं, बल्कि जार के

Sahitya Bhawan

प्रति उनकी निष्ठा और सेवाओं के बदले में मिली थी। यहां की स्थिति फ्रांस जैसी नहीं थी। मिसाल के तौर पर, फ्रांसीसी क्रान्ति के दौरान ब्रिटनी के किसान न केवल नवाबों का सम्मान करते थे, बल्कि उन्होंने नवाबों को बचाने के लिए बाकायदा लड़ाइयां भी लड़ीं। इसके विपरीत, रूस के किसान चाहते थे कि नवाबों की जमींन छीनकर किसानों के बीच बांट दी जाए। बहुधा वह लगान भी नहीं चुकाते थे। कई जगह तो जमींदारों की हत्या भी की जा चुकी थी। 1902 में दक्षिणी रूस में ऐसी घटनाएं बड़े पैमाने पर घटीं। 1905 में तो पूरे रूस में ही ऐसी घटनाएं घटने लगीं।

रूसी किसान यूरोप के बाकी किसानों के मुकाबले एक और लिहाज से भी भिन्न थे। यहां के किसान समय–समय पर सारी जमीन को अपने कम्यून (मीर) को सौंप देते थे और फिर कम्यून ही प्रत्येक परिवार की जरूरत के हिसाब से किसानों को जमीन बांटता था।

**प्रश्न 4. सन् 1917 से पहले रूस की कामकाजी आबादी यूरोप के बाकी देशों के मुकाबले किन–किन स्तरों पर भिन्न थी?**

**उत्तर**—सन् 1917 से पहले रूसी किसान (कामकाजी वर्ग) यूरोप के बाकी किसानों के मुकाबले भिन्न थे। यहां के किसान समय–समय पर सारी जमीन को अपने कम्यून (मीर) को सौंप देते थे और फिर कम्यून ही प्रत्येक परिवार की जरूरत के हिसाब से किसानों को जमीन बांटता था।

**प्रश्न 5. 1917 में जार का शासन क्यों खत्म हो गया?**

**उत्तर**—सन् 1917 की सर्दियों में रूस की राजधानी पेत्रोग्राद की हालत बहुत खराब थी। रविवार 25 फरवरी को सरकार ने ड्यूमा को बर्खास्त कर दिया। सरकार के इस फैसले के खिलाफ राजनीतिज्ञ बयान देने लगे। 26 तारीख को प्रदर्शनकारी बहुत बड़ी संख्या में बाएं तट के इलाके में इकट्ठा हो गए। 27 को उन्होंने पुलिस मुख्यालयों पर हमला करके उन्हें तहस–नहस कर दिया। रोटी, तनख्वाह, काम के घण्टों में कमी और लोकतान्त्रिक अधिकारों के पक्ष में नारे लगाते असंख्य लोग सड़कों पर जमा हो गए। सरकार ने स्थिति पर नियन्त्रण कायम करने के लिए एक बार फिर घुड़सवार सैनिकों को तैनात कर दिया। घुड़सवार सैनिकों की टुकड़ियों ने प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाने से इनकार कर दिया। गुस्साए सिपाहियों ने एक रेजीमेण्ट की बैरक में अपने एक अफसर पर गोली चला दी। तीन दूसरी रेजीमेन्टों ने भी बगावत कर दी और हड़ताली मजदूरों के साथ आ मिले। सैनिक कमाण्डरों ने जार को सलाह दी की वह राजगद्दी छोड़ दें। उसने कमाण्डरों की बात मान ली और 2 मार्च को गद्दी छोड़ दी।

**प्रश्न 6. दो सूचियां बनाइए : एक सूची में फरवरी क्रान्ति की मुख्य घटनाओं और प्रभावों को लिखिए और दूसरी सूची में अक्टूबर क्रान्ति की प्रमुख घटनाओं और प्रभावों को दर्ज कीजिए।**

Sahitya Bhawan

**उत्तर—सूची-I : फरवरी क्रान्ति—**

**घटनाएं**—(i) संसदीय प्रतिनिधियों द्वारा जार द्वारा ड्यूमा को भंग करने की कोशिशों का विरोध।

(ii) 50 फैक्ट्रियों के मजदूरों द्वारा हड़ताल का ऐलान।

(iii) बहुत सारे कारखानों में हड़ताल का नेतृत्व महिलाओं के द्वारा।

(iv) रविवार, 25 फरवरी को सरकार द्वारा ड्यूमा को बर्खास्त किया जाना।

(v) रोटी, तनख्वाह, काम के घण्टों में कमी और लोकतान्त्रिक अधिकारों के पक्ष में असंख्य लोगों का सड़क पर जमा होना।

(vi) 2 मार्च को जार द्वारा गद्दी को छोड़ना।

(vii) रूस के भविष्य के बारे में फैसला लेने की जिम्मेदारी संविधान सभा को सौंप दी गई।

**प्रभाव**—

(i) औद्योगिक इलाकों में फैक्ट्री कमेटियां बनायी गईं। इन कमेटियों के माध्यम से मजदूर फैक्ट्री चलाने के मालिकों के तौर–तरीकों पर सवाल खड़े करने लगे।

(ii) ट्रेड यूनियनों की संख्या बढ़ने लगी।

(iii) सेना में सिपाहियों की समितियां बनने लगीं।

(iv) भूमि समितियां बनने लगीं।

**सूची-II : अक्टूबर क्रान्ति—**

**घटनाएं**—

(i) अन्तरिम सरकार और बोल्शेविकों के बीच टकराव बढ़ता गया।

(ii) पेत्रोग्राद में अखिल रूसी सोवियत कांग्रेस की बैठक हुई जिसमें बहुमत ने बोल्शेविकों की क्रान्ति का समर्थन किया।

(iii) मास्को—पेत्रोग्राद इलाके पर बोल्शेविकों का नियन्त्रण स्थापित हुआ।

**प्रभाव**—

(i) बैंकों और उद्योगों का राष्ट्रीयकरण होना।

(ii) जमीन को सामाजिक सम्पत्ति घोषित किया गया।

(iii) किसानों को सामन्तों की जमीनों पर कब्जा करने की खुली छूट दे दी गई।

(iv) अभिजात्य वर्ग द्वारा पुरानी पदवियों के इस्तेमाल पर रोक लगा दी।

**प्रभाव**—

(i) राज्य के अन्तर्गत राजनीतिक स्वायत्तता दे दी गई।

(ii) घुमन्तूवाद की रोकथाम की कोशिश की गई।

Sahitya Bhawan®

**प्रश्न 7. बोल्शेविकों ने अक्टूबर क्रान्ति के फौरन बाद कौन–कौन से प्रमुख परिवर्तन किए?**

**उत्तर—अक्टूबर क्रान्ति के परिवर्तन**—बोल्शेविक निजी सम्पत्ति की व्यवस्था के पूरी तरह खिलाफ थे। ज्यादातर उद्योगों और बैंकों का नवम्बर 1917 में ही राष्ट्रीयकरण किया जा चुका था। उनका स्वामित्व और प्रबन्धन सरकार के नियन्त्रण में आ चुका था। जमींन को सामाजिक सम्पत्ति घोषित कर दिया गया। किसानों को सामंतों की जमीनों पर कब्जा करने की खुली छूट दे दी गई। शहरों में बोल्शेविकों ने मकान–मालिकों के लिए पर्याप्त हिस्सा छोड़कर उनके बड़े मकानों के छोटे–छोटे हिस्से कर दिए ताकि बेघरबार या जरूरतमंद लोगों को भी रहने की जगह दी जा सके। उन्होंने अभिजात्य वर्ग द्वारा पुरानी पदवियों के इस्तेमाल पर रोक लगा दी। परिवर्तन को स्पष्ट रूप से सामने लाने के लिए सेना और सरकारी अफसरों की वर्दियां बदल दी गईं। इसके लिए 1918 में एक परिधान प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें सोवियत टोपी (बुदियोनोव्का) का चुनाव किया गया।

बोल्शेविक पार्टी का नाम बदलकर रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) रख दिया गया। नवम्बर 1917 में बोल्शेविकों ने संविधान सभा के लिए चुनाव कराए, लेकिन इन चुनावों में उन्हें बहुमत नहीं मिल पाया। जनवरी 1918 में असेम्बली ने बोल्शेविकों के प्रस्तावों को खारिज कर दिया और लेनिन ने असेम्बली बर्खास्त कर दी। उनका मत था कि अनिश्चित परिस्थितियों में चुनी गई असेम्बली के मुकाबले अखिल रूसी सोवियत कांग्रेस कहीं ज्यादा लोकतान्त्रिक संस्था है। मार्च 1918 में अन्य राजनीतिक सहयोगियों की असहमति के बावजूद बोल्शेविक ने ब्रेस्ट लिटोव्स्क में जर्मनी से सन्धि कर ली। आने वाले सालों में बोल्शेविक पार्टी अखिल रूसी सोवियत कांग्रेस के लिए होने वाले चुनावों में हिस्सा लेने वाली एकमात्र पार्टी रह गई। अखिल रूसी सोवियत कांग्रेस को अब देश की संसद का दर्जा दे दिया गया था। रूस एक–दलीय राजनीतिक व्यवस्था वाला देश बन गया। ट्रेड यूनियनों पर पार्टी का नियन्त्रण रहता था। गुप्तचर पुलिस (जिसे पहले चेका और बाद में ओजीपीयू तथा एनकेवीडी का नाम दिया गया) बोल्शेविकों की आलोचना करने वालों को दण्डित करती थी। बहुत सारे युवा लेखक और कलाकार भी पार्टी की तरफ आकर्षित हुए, क्योंकि वह समाजवाद और परिवर्तन के प्रति समर्पित थी। अक्टूबर 1917 के बाद ऐसे कलाकारों और लेखकों ने कला और वास्तुशिल्प के क्षेत्र में नए प्रयोग शुरू किए, लेकिन पार्टी द्वारा थोपी गई सेंसरशिप के कारण बहुत सारे लोगों का पार्टी से मोह भंग भी होने लगा था।

**प्रश्न 8. निम्नलिखित के बारे में संक्षेप में लिखिए :**

**उत्तर**—(i) **कुलक**—रूस में सम्पन्न किसानों को कुलक कहा जाता था। स्टालिन ने सामूहिकीकरण कार्यक्रम के तहत कुलकों के ठिकानों पर छापे मारकर अनाज की कमी को कम करने का प्रयास किया।

NCERT For Class-9

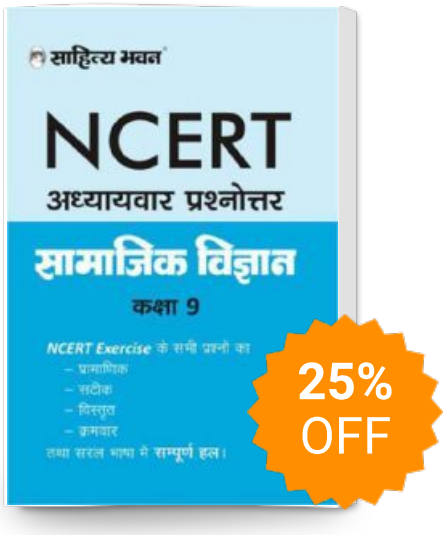


Publisher : Sahitya Bhawan

ISBN : 9789388115148

Author : Dr. Rupali Shrivastawa, Monika Gupta, Dr. Anuradha Sharma

Type the URL :https://www.kopykitab.com/product/52344

Get this eBook